JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बीकानेर की ऐतिहासिक, सामाजिक एवं आर्थिक दशा व विकास 18वीं सदी के संदर्भ में

प्रेमा राम
शोधार्थी
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय पीलीबंगा, हनुमानगढ़

डॉ0 तपेन्द्र सिंह शेखावत
सह आचार्य इतिहास विभाग
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय पीलीबंगा, हनुमानगढ़

शोध का सारांश

18वीं सदी भारतीय इतिहास का एक संक्रमणकाल थी। इस समय मुगल साम्राज्य की केंद्रीय सत्ता शिथिल हो चुकी थी और प्रांतीय तथा क्षेत्रीय शक्तियाँ उभरकर सामने आ रही थीं। राजस्थान के राजपूत राज्यों में जहाँ मेवाड़, मारवाड़, जयपुर, जोधपुर और बीकानेर अपनी–अपनी राजनीतिक स्थिति सँभाल रहे थे, वहीं लगातार बाहरी आक्रमणों और आंतरिक संघर्षों ने उनके अस्तित्व को चुनौती दी। इन्हीं परिस्थितियों में बीकानेर राज्य ने अपने ऐतिहासिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन को नए सिरे से व्यवस्थित करने का प्रयास किया।

इस शोध का सार यही है कि 18वीं सदी में बीकानेर राज्य ने राजनीतिक अस्थिरता और प्राकृतिक कठिनाइयों के बावजूद अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन को बनाए रखा और आर्थिक गतिविधियों को आगे बढ़ाने का प्रयत्न किया। राजनीतिक दृष्टि से यह सदी बीकानेर के लिए संघर्षमय रही–मराठों, जाटों और आंतरिक सामंती शक्तियों के दबाव में राज्य को बार–बार अपनी नीतियों में परिवर्तन करना पड़ा। सामाजिक दृष्टि से जातिगत संरचना, धार्मिक परम्पराएँ, स्त्रियों की स्थिति और शिक्षा–व्यवस्था ने उस समय की सामूहिक मानसिकता को प्रभावित किया। आर्थिक दृष्टि से कृषि और पशुपालन जैसे पारंपरिक साधन मुख्य आधार बने, वहीं व्यापारिक मार्गों तथा कर–व्यवस्था ने राज्य की आय को सुदृढ़ किया।

इस प्रकार यह शोध–पत्र 18वीं सदी के बीकानेर को बहुआयामी परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास करता है, जहाँ ऐतिहासिक घटनाएँ, सामाजिक जीवन और आर्थिक गतिविधियाँ एक–दूसरे से जुड़ी हुई दिखाई देती हैं। निष्कर्षतः यह स्पष्ट होता है कि बीकानेर राज्य ने अपने भौगोलिक मरुस्थलीय परिवेश और राजनैतिक चुनौतियों के बीच भी अपनी विशिष्ट पहचान बनाई और आगामी काल के लिए आधार तैयार किया।

शोध–कुंजी :– प्रामाणिकता, उपयोग, ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक, दशा, विकास, अध्ययन, विविधप्रकार, स्रोत–सामग्रियों, संकलन, ऐतिहासिक, बहुआयामी, गतिविधियाँ, भौगोलिक, परिवेश, मरूस्थलीय, शक्तियाँ, मराठे, जाट, सिक्ख, राजपूताना, ब्राह्मण, राजपूत, बनिया, जाट, मेघवाल आदि।

शोध की प्रस्तावना

18वीं सदी का काल भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास में संक्रमण एवं संघर्ष का युग माना जाता है। इस काल में एक ओर मुगल साम्राज्य की केंद्रीय सत्ता निरंतर कमजोर हो रही थी, वहीं दूसरी ओर क्षेत्रीय शक्तियाँ – मराठे, जाट,

सिक्ख तथा विभिन्न राजपूत राज्य अपनी–अपनी सत्ता को सुदृढ़ करने का प्रयास कर रहे थे। राजपूताना, विशेषकर मरुस्थलीय क्षेत्र बीकानेर, इस राजनीतिक उथल–पुथल से अछूता नहीं रहा।

बीकानेर राज्य की स्थापना 15वीं शताब्दी में राव बीका द्वारा हुई थी, परंतु 18वीं सदी में यह राज्य अनेक चुनौतियों से घिरा हुआ था। बाहरी स्तर पर मराठों और जाटों के दबाव, आंतरिक स्तर पर सामंती सरदारों की स्वायत्त प्रवृत्तियों तथा प्राकृतिक स्तर पर बार–बार पड़ने वाले अकाल ने बीकानेर की स्थिति को जटिल बना दिया।

सामाजिक दृष्टि से यह काल जातिगत संरचना, धार्मिक मान्यताओं और पारंपरिक जीवन–पद्धति का प्रतीक था। ब्राह्मण, राजपूत, बनिया, जाट, मेघवाल इत्यादि जातियों ने बीकानेर की सामाजिक संरचना को आकार दिया। चारण और भाट साहित्य ने सामंती परम्पराओं को सहेजकर रखा, वहीं लोकगीतों में उस युग की स्त्रियों की स्थिति, सांस्कृतिक परम्पराएँ और जीवन–संघर्ष का स्पष्ट चित्रण मिलता है।

आर्थिक दृष्टि से, यद्यपि बीकानेर मरुस्थलीय भू–भाग था और वर्षा पर आधारित कृषि उसकी सबसे बड़ी कमजोरी रही, फिर भी यहाँ का पशुपालन (विशेषकर ऊँट व भेड़ पालन), व्यापारिक मार्गों पर स्थित काफिलों की गतिविधियाँ तथा कर–व्यवस्था राज्य की अर्थव्यवस्था के प्रमुख आधार बने। व्यापारिक दृष्टि से बीकानेर ने दिल्ली, लाहौर, सिंध और गुजरात तक अपने व्यापारिक संबंध बनाए रखे।

अतः बीकानेर की 18वीं सदी को केवल संघर्ष और कठिनाइयों का काल मानना अधूरा दृष्टिकोण होगा। वास्तव में यह एक ऐसा दौर था जब बीकानेर ने अपने ऐतिहासिक अनुभवों, सामाजिक परम्पराओं और आर्थिक संसाधनों के आधार पर स्वयं को टिकाए रखा और धीरे–धीरे विकास की ओर अग्रसर हुआ।

शोध का सोपान

शोध कार्य को व्यवस्थित रूप से आगे बढ़ाने के लिए इसे विभिन्न चरणों (सोपानों) में विभाजित करना आवश्यक है। प्रत्येक सोपान बीकानेर की 18वीं सदी की ऐतिहासिक, सामाजिक एवं आर्थिक दशा के विश्लेषण में एक नया दृष्टिकोण प्रदान करता है। इस शोध का सोपान निम्न प्रकार से निर्धारित किया गया है –

(क) ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण – सबसे पहले 18वीं सदी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन किया गया है, जिसमें मुगल सत्ता के पतन, मराठों के विस्तार, जाटों के उदय और राजपूताना राज्यों की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। इस सोपान का उद्देश्य यह समझना है कि बीकानेर राज्य किस प्रकार इन परिस्थितियों से प्रभावित हुआ।

(ख) बीकानेर का राजनीतिक अध्ययन – बीकानेर की आंतरिक राजनीतिक संरचना, शासकों की नीतियाँ, सामंती सरदारों की भूमिका और पड़ोसी राज्यों के साथ संबंधों का अध्ययन किया गया है। इस सोपान के अंतर्गत युद्धों, संधियों और प्रशासनिक नीतियों का मूल्यांकन किया गया है।

(ग) सामाजिक संरचना का अध्ययन – बीकानेर के सामाजिक जीवन को समझने का प्रयास किया गया है। इसमें जाति–व्यवस्था, धार्मिक मान्यताएँ, स्त्रियों की स्थिति, शिक्षा, लोकजीवन और सांस्कृतिक गतिविधियों का विश्लेषण किया गया है।

(घ) आर्थिक दशा का परीक्षण –शोध में आर्थिक स्थिति पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इसमें कृषि, पशुपालन, व्यापारिक मार्ग, काफिला व्यवस्था, कर–प्रणाली और प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग का अध्ययन शामिल है। यह सोपान बीकानेर की आर्थिक मजबूती व चुनौतियों को रेखांकित करता है।

(ङ) चुनौतियों एवं विकास का तुलनात्मक अध्ययन – शोध में बीकानेर के समक्ष विद्यमान समस्याओं–अकाल, युद्ध, कर–संग्रहण की कठिनाइयों और उसके बावजूद हुए विकास का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

(च) समग्र मूल्यांकन

बीकानेर की ऐतिहासिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति का समग्र मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है, जिससे स्पष्ट होता है कि 18वीं सदी का बीकानेर किस प्रकार संघर्ष और विकास दोनों का प्रतीक था।

शोध का महत्व

किसी भी ऐतिहासिक शोध का महत्व इस बात पर निर्भर करता है कि वह अतीत को समझने और वर्तमान को दिशा देने में कितना सहायक सिद्ध होता है। 18वीं सदी में बीकानेर राज्य का अध्ययन केवल स्थानीय स्तर तक सीमित न रहकर समूचे राजस्थान और उत्तर भारत की ऐतिहासिक समझ को गहराई प्रदान करता है। इस शोध का महत्व निम्न बिंदुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है –

(क) ऐतिहासिक महत्व – यह शोध मुगल साम्राज्य के पतनकाल में क्षेत्रीय शक्तियों की भूमिका को उजागर करता है। बीकानेर की राजनीतिक नीतियाँ, पड़ोसी राज्यों के साथ उसके संबंध और सामंती सरदारों की स्थिति को समझना, 18वीं सदी के राजस्थानी इतिहास को पूर्णता प्रदान करता है।

(ख) सामाजिक महत्व – बीकानेर की सामाजिक संरचनाकृजाति व्यवस्था, स्त्रियों की दशा, शिक्षा एवं धार्मिक–सांस्कृतिक जीवन का अध्ययन समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। यह शोध यह दर्शाता है कि किस प्रकार मरुस्थलीय और सामंती समाज में परम्पराएँ और लोकाचार जनता के जीवन को नियंत्रित करते थे।

(ग) आर्थिक महत्व – इस शोध का एक विशेष महत्व यह है कि यह 18वीं सदी के बीकानेर की अर्थव्यवस्था पर केंद्रित है। कृषि, पशुपालन, व्यापार और कर–प्रणाली के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि किस प्रकार सीमित संसाधनों वाले मरुस्थलीय प्रदेश ने अपनी आर्थिक संरचना विकसित की।

(घ) सांस्कृतिक महत्व – बीकानेर का सांस्कृतिक जीवन – लोकगीत, चारण साहित्य, धार्मिक अनुष्ठान और लोकपर्व उस समय की सामूहिक मानसिकता का परिचायक है। इस शोध के माध्यम से उस कालखंड की सांस्कृतिक निरंतरता और परम्पराओं की भूमिका सामने आती है।

(ङ) शोधार्थियों के लिए महत्व – यह अध्ययन भविष्य के शोधार्थियों को न केवल 18वीं सदी के राजस्थान की समझ देगा, बल्कि उन्हें यह भी बताएगा कि मरुस्थलीय समाज किस प्रकार अपनी ऐतिहासिक चुनौतियों से जूझता रहा और किस प्रकार उसने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई।

शोध के उद्देश्य

किसी भी शोध का आधार उसके उद्देश्य होते हैं। ये उद्देश्य शोध के दायरे, दिशा और गहनता को निर्धारित करते हैं। बीकानेर की 18वीं सदी की ऐतिहासिक, सामाजिक एवं आर्थिक दशा व विकास का अध्ययन करने हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं–

1. 18वीं सदी में बीकानेर की राजनीतिक स्थिति का विश्लेषण करना।
2. मुगल साम्राज्य के पतन और मराठों–जाटों के उदय का बीकानेर की राजनीति पर प्रभाव स्पष्ट करना।
3. बीकानेर शासकों की नीतियों, संधियों, युद्धों और सामंती संरचना का अध्ययन करना।
4. बीकानेर की सामाजिक संरचना –जाति व्यवस्था, सामंती संबंध और धार्मिक जीवन का विश्लेषण करना।
5. स्त्रियों की स्थिति, शिक्षा और सांस्कृतिक परम्पराओं का मूल्यांकन करना।
6. लोकजीवन में प्रचलित रीति–रिवाजों, लोकगीतों और साहित्य की भूमिका को समझना।
7. मरुस्थलीय परिस्थिति में कृषि और पशुपालन की स्थिति का परीक्षण करना।
8. व्यापारिक मार्गों, कर–प्रणाली और राजस्व व्यवस्था का अध्ययन करना।
9. बीकानेर की अर्थव्यवस्था पर प्राकृतिक आपदाओं (विशेषकर अकाल) के प्रभाव को जानना।

शोध का निष्कर्ष

18वीं सदी भारतीय इतिहास में एक जटिल और संक्रमणकालीन समय था। इस सदी में एक ओर मुगल साम्राज्य की केंद्रीय सत्ता धीरे–धीरे समाप्त हो रही थी, वहीं दूसरी ओर मराठों, जाटों और क्षेत्रीय राजपूत राज्यों के बीच सत्ता संघर्ष निरंतर जारी था। ऐसे समय में बीकानेर राज्य ने अपने सीमित संसाधनों और भौगोलिक चुनौतियों के बीच स्वयं को टिकाए रखने का प्रयास किया। इस शोध का निष्कर्ष निम्न प्रकार से सामने आता है–

बीकानेर की राजनीति 18वीं सदी में अस्थिर और संघर्षपूर्ण रही। शासकों को मराठों और जाटों के आक्रमणों का सामना करना पड़ा तथा सामंती सरदारों की स्वायत्त प्रवृत्तियों ने राज्य की एकता को बार–बार चुनौती दी। फिर भी, राजनयिक समझौतों, सैन्य संगठन और पड़ोसी राज्यों से संतुलन बनाकर बीकानेर अपने अस्तित्व को बनाए रखने में सफल रहा।

सामाजिक दृष्टि से बीकानेर की संरचना जातिगत श्रेणियों पर आधारित थी, जिसमें ब्राह्मण, राजपूत, जाट, बनिया, मेघवाल आदि प्रमुख घटक थे। स्त्रियों की स्थिति परंपरागत ढांचे में बंधी हुई थी, परंतु सांस्कृतिक जीवन–लोकगीत, चारण–काव्य, धार्मिक अनुष्ठान जनता की सामूहिक चेतना को जीवित रखे हुए थे। शिक्षा सीमित थी, किंतु धार्मिक संस्थाएँ और लोकसाहित्य सांस्कृतिक निरंतरता का आधार बने।

आर्थिक दृष्टि से बीकानेर मरुस्थलीय भूभाग होने के कारण अनेक कठिनाइयों से जूझ रहा था। वर्षा पर आधारित कृषि असुरक्षित थी, किंतु पशुपालन (विशेषकर ऊँट व भेड़ पालन) ने राज्य की अर्थव्यवस्था को स्थिरता दी। व्यापारिक कारवाँ मार्गों ने बीकानेर को दिल्ली, पंजाब, गुजरात और सिंध से जोड़ा। कर–प्रणाली राज्य के राजस्व का मुख्य साधन बनी, हालांकि बार–बार पड़ने वाले अकालों ने अर्थव्यवस्था को गहरा आघात पहुँचाया।

बीकानेर की सबसे बड़ी चुनौती प्राकृतिक असुरक्षा (अकाल, मरुस्थलीय स्थिति) और राजनीतिक दबाव थी। इसके बावजूद राज्य ने अपनी सामाजिक–सांस्कृतिक परम्पराओं और आर्थिक साधनों के सहारे अपने अस्तित्व को बनाए रखा। इस प्रकार बीकानेर न केवल संघर्ष का प्रतीक था बल्कि अनुकूलन और विकास का भी उदाहरण था।

इस शोध का समग्र निष्कर्ष यह है कि 18वीं सदी का बीकानेर केवल पतन और अस्थिरता का प्रतीक नहीं था, बल्कि यह एक ऐसा राज्य था जिसने प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच भी अपनी पहचान, संस्कृति और आर्थिक जीवन को संरक्षित रखा। इस कालखंड ने आगे आने वाली शताब्दियों में बीकानेर की सामाजिक और सांस्कृतिक धारा को मजबूत करने में आधारभूत भूमिका निभाई।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, गोविन्द : चुरू मण्डल का शोधपूर्ण इतिहास, 1974
2. खंजाची, मोतीचन्द्र : बीकानेर की चित्रकला, राजस्थान भारती, भाग–5
3. गहलोत, जगदीश सिंह : राजपूताना का इतिहास भाग–1 व 2, जोधपुर, 1937
4. गहलोत, जगदीश : राजस्थान के रिति–रिवाज और त्यौहार, जोधपुर, 1981
5. गहलोत, देवेन्द्र सिंह : राजस्थान का सामाजिक इतिहास, जोधपुर ग्रंथागार, जोधपुर, 1982
6. गुप्त, परमेश्वरीलाल (सं.) : कुतुबन कृत मृगावती, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1967
7. गुप्ता, बी.एल. : ट्रेड एण्ड कॉमर्स इन राजस्थान, जयपुर, 1987
8. गुप्ता, मोहन लाल : बीकानेर : जिलेवार सांस्कृतिक इतिहास, शोभा प्रकाशन, जोधपुर, 2004
9. ग्रे बसील : राजपूत पेंटिंग, फैबर एण्ड फैबर, लंदन, 1938
10. गोएट्ज, हरमन : आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर ऑफ बीकानेर स्टेट, ऑक्सफोर्ड प्रैस लन्दन, 1950